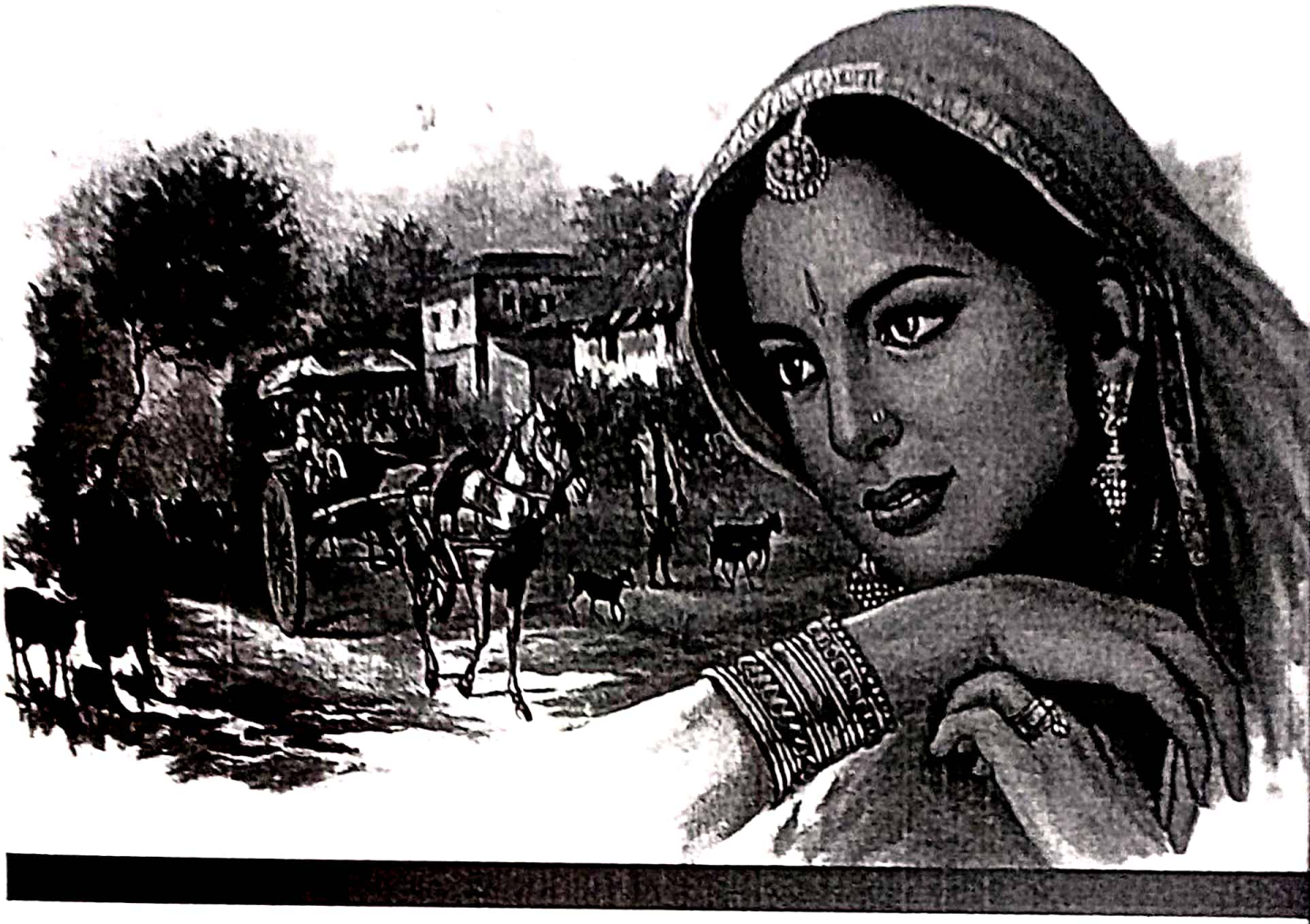

हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० कादम्बिनी मिश्र

हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० कादम्बिनी मिश्र

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० कादम्बिनी मिश्र

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३
ISBN 978-93-5786-102-1
प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Hindi Sahitya : Nari Antardwand Edited by
Dr. Okendra, Dr. Kadambani Mishra

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : नारी : सृष्टि की निर्मात्री एवं सच्ची मार्गदर्शिका ५

१. भारतीय नारी : कल, आज और कल ११
डॉ० घनश्याम भारती

२. हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व २५
डॉ० कादम्बिनी मिश्र

३. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में नारी चेतना का चित्रण २७
डॉ. शोभना कोयकाइन

४. दयानंद पांडेय के उपन्यास में नारी विमर्श ३७
जयश्री बसवेश्वर होदाड़े

५. समकालीन साहित्य में दलित नारी ४५
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे

६. नई कहानी में नारी अस्मिता व संवेदना का प्रश्न और मन्नू भंडारी की कहानियाँ ८५
नटराज गुप्ता

७. समकालीन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श ९४
डॉ० मोहनी दुबे

८. रमणिका गुप्ता कृत आत्मकथा 'हादसे' में चित्रित नारी संघर्ष १०२
जिशुरानी चांगमाइ

९. साहित्य में नारी विमर्श (कृष्णा अग्निहोत्री के 'निलोफर' उपन्यास के विशेष संदर्भ में) १०८
डॉ० बेबी श्रीमंत खिलारे

१०. महिला रचनाकारों के साहित्य में नारी-चिंतन का अंतर्द्वन्द्व ११६
डॉ. पल्लवी सिंह 'अनुमेहा'

११. चंद्रकांता के उपन्यास 'कथा सतीसर' में स्त्री-विमर्श १२१
ममता माली

१२. समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी चेतना और संवेदना १३६
डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल

१३. साहित्य में नारी अंतर्द्वन्द्व एवं प्रतिरोध के स्वर १५३
प्रसादराव जामि

३

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में नारी चेतना का चित्रण

–डॉ॰ शोभना कोक्काड़न

नारी चेतना संबन्धी भारतीय परंपरा : भारत में नारी की स्थिति बहुत पुरानी परंपरा से जुड़ी हुई है। यहाँ विभिन्न जातियाँ, धर्मों, संप्रदायों एवं मान्यताओं का विशाल रूप है। यही कारण है कि नारी इन परंपरा को एकदम से छोड़ नहीं पाती है। यहाँ नारी में परिवर्तन एकदम नहीं बल्कि धीरे–धीरे होता है अर्थात् नारी इपनी सांस्कृतक एवं पारिवारिक परिवेश के कारण मुक्त होने की बात सोच नहीं पाती है। उसकी यह दास्तां काफी लंबी रही है। प्राचीन काल से ही समाज में यह मान्यता रही है कि स्त्री की सार्थकता माँ बनने में निहित है। हिन्दी साहित्य का आरंभिक रूप स्त्री की इसी प्रतिमा को लेकर चलता रहा। साहित्य में नारी चेतना का आरंभिक रूप करूणा, वात्सल्य, दयनीयता, शोषिता तथा अनेक समस्या से ग्रसित रहा है। पितृसत्तात्मक समाज की संरचना ही ऐसी ही रही कि जहाँ स्त्री पुरूष की अनुगामिनी अथवा दासी बनी रहे। "मनुस्मृति" में भी ऐसा कहा है कि "पिता रक्षति कौमारे, भर्तो रक्षति यौवने, पुत्रो रक्षति वार्धक्ये, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति" (बचपन में पिता पर, युवा में पति पर तथा वृद्धावस्था में संतान पर निर्भर रहना है, स्वतंत्रता का अधिकार नहीं है।)

नारी के अधिकार और स्वतंत्रता को खत्म करने का यह क्रम निरंतर चलता ही रहा। किन्तु वैदिक काल में इस प्रकार की स्थिति नहीं थी। स्त्री को जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों के बराबर का अधिकार और अवसर प्राप्त था। पुरूष पत्नी के बिना यज्ञ नहीं कर सकता था। गृहस्थी की केन्द्रबिन्दु भी नारी ही होती थी। मैत्रेयी, गार्गी आदि नारियाँ

Professor & Head, Dept.of Hindi, Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women (Deemed to be University) Coimbatore 641043 (Tamil Nadu)

इस युग की देन है। महाभारत काल तक आते–आते नारी शिक्षा एवं शास्त्र ज्ञान से वंचित होती चली गई। उसका जीवन कर्तव्य और अधिकारों के बीच में फंसकर रह गया और धीरे–धीरे वह पुरूष पर निर्भर रहने लगी।

नारी चेतना संबन्धी भारतीय परंपरा अपनी प्रारंभिक अवस्था में नारी विकास में बाधक के रूप में रहा है। सबसे पहले राजाराम मोहनराय ने उसे इस शोचनीय दशा से उबारने का प्रयास किया। लेकिन वह अधिक सफल न हुआ। आगे शिक्षा प्राप्त कर स्त्रियॉ अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति सचेत हुई। वे सार्वजनिक क्षेत्र में उत्साह के साथ उतरीं। आधुनिक नारी की सभी जीवन–परिस्थितियों का प्रभाव कवि मस्तिष्क पर पडा और उसने अपनी संस्कृति और सभ्यता, अपनी प्रवृत्ति एवं देश की राजनीतिक तथा सामाजिक आवश्यकता के अनुसार उनका चित्रण किया।('हिन्दी साहित्य में नारी'–सरलादेवी–पृ. 77) बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों तक आते–आते हिन्दी साहित्य का नारी विमर्श पाश्चात्य नारीवादी विचार के प्रभाव को ग्रहण करता हुआ एक प्रगतिशील विचार के रूप में उभरकर आया है। आधुनिक काल में अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रभाव के कारण भी यह भावना अधिक बलवती हो उठी है। आधुनिक काल में अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रभाव के कारण भी यह भावना अधिक बलवती हो उठी है।

हिन्दी साहित्य में नारी चेतना

साहित्य में नारी का चित्रण आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक विविध रूप में रहा है। आदिकाल से रीतिकाल तक वह मात्र भोग्या एवं विलास की वस्तु थी। भारतेंदु युग में नारी समस्या से लेकर नारी महिमा का वर्णन करनेवाली कृतियों का समावेश रहा है। द्विवेदी युग में नारी में वेदना, ममता, करूणा, त्याग एवं दायित्वबोध की अभिव्यक्ति मिलती है। छायावाद युग में नारी मात्र "प्रियतमा" नहीं बल्कि देवी माँ, सहचरी तथा प्राण भी रही है और प्रगतिवाद उसे देवता रूप से अलग करके मानवीय रूप प्रदान करता है। इस प्रकार हिन्दी

साहित्य में नारी चेतना का इतिहास काफी प्राचीन एवं पारंपरिक स्वभाव का रहा है।

महादेवी के रेखाचित्रों में नारी चेतना

महादेवी के गद्य साहित्य में नारी चेतना का सशक्त एवं मार्मिक चित्रण उनकी रेखाचित्रों द्वारा ही अभिव्यक्त होता है। अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ एवं श्रृंखला की कड़ियाँ – इन तीन कृतियों में महादेवी ने भारतीय नारी का, विशेषकर निम्न श्रेणी की नारियों के जीवन की करूण कहानी का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

महादेवी वर्मा के नारी विषयक लेखों के बारे में डॉ. निर्मला जैन ने यों कहा– "महादेवी के नारी विषयक लेख भारत में नारीवादी चिंतन की आरंभिक कड़ी हैं। यह अपने समय से कदम ताल मिलाकर चलना मात्र नहीं था, आनेवाले समय का विवेचन करके उन्होंने इसके व्यावहारिक निदानों की वकालत की।"(महादेवी वर्मा संचयिता, पृ. 24–25)

"अतीत के चलचित्र" में चित्रित ग्यारह रेखाचित्रों में सात रेखा चित्र नारी विषयक है जैसे भाभी, बिन्दा, लछमा, सबिया, बिट्टो, दो फूल (बालिका माँ), सबला।

भाभी –महादेवी की नारी पात्र "भाभी" अठ्ारह वर्ष की विधवा है। घर के चहार दीवारी के भीतर परिवार के सदस्य–ससुर और ननद उसकी पिटाई करते हैं। वह भीतर की पीड़ा को दूसरों के साथ बाँटना चाहती है किन्तु बाहर जाने के सारे रास्ते बंद हैं। चित्त की दशा और मन की व्यथा से परिवार के किसी सदस्य को वह अवगत नहीं करा सकती। उसकी दयनीय स्थिति का चित्रण लेखिका ने इतने मार्मिक ढंग से किया है, पढ़कर किसी का भी हृदय दुख एवं दर्द महसूस करेगा।

बिन्दा –बिन्दा" महादेवी के पड़ोस की बालिका है। वह सौतेली माँ के संरक्षण में पल बढ़ रही है। सौतेली माँ ज़हरीली नागिन सी है जो उसे खूब सताती है। बिन्दा को अपनी माँ की याद आती है जो मर चुकी

है। दिन भर दासी की तरह घर का सारा काम निपटाने के बाद उसे खाने को सूखी रोटी मिलती है। फिर भी वो उफ् तक नहीं करती और रात में सबके सो जाने के बाद आसमान के तारों में अपनी माँ को ढूँढ़ने का दृश्य अत्यंत हृदयस्पर्शी है। बाल्यावस्था में ही माँ के प्रेम और वात्सल्य से वंचित होने का सा सुख बच्चों के लिए और कुछ भी नहीं है बिन्दा को इतना मात्र नहीं विमाता की क्रूरताओं को भी झेलना पड़ता है। उस अबोध बालिका के मन का करूण क्रन्तन महोदवी ने उसी रूप में पाठकों तक पहुँचाया है।

लछमा– रेखाचित्र "लछमा" की पहाड़ी स्त्री का पति पागल है घर के लोग उससे मारपीट करते हैं और मृत समझकर फेंक दिया जाता है लेकिन वह मरती नहीं। लछमा सचेत होकर माता–पिता के पास लौट आती है पर वहाँ उसे कोई सुकून नहीं मिला। घर का सारा बोझ उसके नाजुक कंधों पर आ पड़ता है क्योंकि पिता की आँखें खराब हैं, माँ विकलांग है, भाभी के स्वर्ग सिधार जाने के कारण भाई जीवन से विरक्त हो चुका है। भतीजे भतीजी पालने में लछमा साहस और मेहनत के साथ सबका पेट भरती है अपितु सेवाभाव के साथ सबकी सेवा भी करती है। नारी के मानवीय गुण लछमा में सर्वोपरी हैं। लेखिका कहती है उसका मन दर्पण जैसा स्वच्छ है। महादेवी की लछमा करूणा की कोख से जन्मी है। नारी सहज दायित्व बोध, करूणा, वात्सल्य सर्वोपरी भूमि के जैसा क्षमाशील नारी का एक उत्तम नमूना है "लछमा"।

सबिया– "सबिया" अपने बच्चों के साथ महोदवी के घर का काम माँगने आती है। उसका जीवन इतना जटिल है कि जीने के लिए यदि वह मृत्यु से लड़ रही है तो मरने के लिए जीवन से संघर्ष कर रही है। क्योंकि अपने मासूम बच्चे का दायित्व उसके कंधों पर है। "सबिया" के चरित्र द्वारा लेखिका ने यह भी साबित किया है कि भारतीय नारी अपने माथे के सिन्दूर को बनाये रखने के लिए अपने पति को सपत्नी के साथ स्वीकारने को तैयार है। सबिया का मन इतना विशाल है कि कड़ी मेहनत करके अपने बच्चों का मात्र नहीं, सास को भी वह संभालती है। संरक्षण का दायित्व महादेवी स्वयं अपने कंधों पर लेती है। उसके चरित्र

के द्वारा महादेवी ने एक सामाजिक समस्या का अंकन किया है। समाज में ऐसे क्रूर एवं निष्ठुर पुरूष होते हैं जो इस तरह के निरीह बालिकाओं को अपने काम पूर्ति का साधन बनाते हैं।

बिट्टो– "बिट्टो" में विधवा में पुनर्विवाह की दुर्दशा का मार्मिक रेखांकन है। "नारी" को परिवार के लोग बोझ समझने पर उसका जीवन जितना जटिल बन जाता है, इसका एक उत्तम दृष्टांत है बिट्टो का जीवन। बिट्टो अशिक्षित एवं निरालंब विधवा है। इसलिए दूसरों के निर्णय को उसे चुपचाप सहना पड़ता है। इसलिए कि वह दुबारा शादी के लिए सहमत हो जाती है। अंत में उस बूढ़े पति की भी मृत्यु हो जाती है। भारतीय परिवारों के निरालंब विधवाओं का सच्चा चित्र है बिट्टो की कहानी।

बालिका माँ (दो फूल)

इसमें बाल्यावस्था में माँ बन गयी एक भोली बालिका का करूण चित्र है। उस बालिका एवं उसके बच्चे का संरक्षण का दायित्व लेखिका ने स्वयं अपने कंधों पर ले लिया है। उसके चरित्र के द्वारा लेखिका ने एक सामाजिक समस्या का अंकन किया है। समाज में ऐसे क्रूर एवं निष्ठुर पुरूष आज भी विद्यमान है जो इस तरह के निरीह एवं भोली भाली बालिकाओं को अपने कामपूर्ति का साधन बनाते हैं।

सबला– "सबला" रेखाचित्र में महादेवी ने एक ऐसी नारी का चित्र खींचा है जो जीवन के विपरीत परिस्थितियों पर भी हाश नहीं है। अपने पति की मृत्यु के बाद उसके साँस और ससुर ने उस पर घर में उसे एक नौकरानी के रूप में भी रखने को तैयार नहीं थे। अंत में वह विधवाश्रम में शरण लेती है।

बदलू– "बदलू" में "रधिया" इनती लाचार और असहाय है कि उसे अकेले ही अपने बच्चे को पैदा करना पड़ा। पीड़ा के समय वह अकेली थी। पीड़ा के मारे उससे उठा नहीं जा रहा है अतः लेटे–लेटे दरांती से

वह स्वयं अपना नाल काटती है। इसी कारण ठीक से न कट सका। पर सोचती है–

"चिन्ता की बात नहीं है, क्योंकि तेल लगा देने से दो दिन में सूख जाएगा।"

महादेवी का नारी पात्र किसी भी परिस्थिति में भी हारती नहीं। उसमें इतनी इच्छाशक्ति एवं चेतना है और किसी भी विपरित संदर्भ का सामना करने की शक्ति है।

"स्मृति की रेखाओं" में चित्रित सात रेखाचित्रों में चार नारी चरित्र की मार्मिक कहानी है जैसे भक्तिन, मुन्नू की माई, बिबिया और गुँगिया।

"भक्तिन" महादेवी की सेविका सहचरी एवं प्रिय दोस्त भी थी। उनतीस वर्ष की अवस्था में वह विधवा हो गई। अपने बच्चों का पालन करने के लिए उसने बड़ी मेहनत की। जीवन के कटु यथार्थ का धैर्य के साथ सामना किया। भक्तिन के चरित्र के द्वारा महादेवी ने एक विश्वस्त सेविका संबंध नारी एवं कुशल सहचरी का चित्र खींचा है। भक्तिन के साथ उनकी मित्रता इतनी घनी है कि उसकी कहानी वे न पूरा करना चाहती हैं।

"मुन्नू की माई" अपने परिवार के सदस्यों का देखभाल के लिए कड़ी मेहनत करने वाली एक श्रमजीवी है। वह बचपन में अनाथत्व से पीड़ित हैतो बड़े होने पर परिवार का बोझ स्वयं लेने की विवशता से पीड़ित है। फिर भी वह चुपचाप घर के बाहर एवं भीतर का काम करती है और अपने परिवार को संभालती है। इस रेखा चित्र में महादेवी ने समाज के जाति प्रथा पर खुलकर प्रहार किया है।

"बिबिया" रेखाचित्र द्वारा महादेवी ने यह साबित किया है कि एक नारी के द्वारा अच्छी विमाता भी बन सकती है। बिबिया अपने पति के बच्चों को अपने बच्चों के समान प्यार से देखभाल करती है।

है"बिबिया" का चरित्र। अपना जीवन तक उन मातृ हीन बच्चों के लिए उसने समर्पित किया। फिर भी उस अभागिन को उस घर को छोड़कर जाना पड़ा क्योंकि उसके पति के बड़े बेटे ने उससे दुर्वव्यहार किया। नारी के प्रति समाज में होनेवाले अत्याचार का एक उत्तम दृष्टांत है बिबिया धोबिन का जीवन।

"गूँगिया" नामक रेखाचित्र में लेखिका ने एक गूँगी औरत का चित्रण खींचा है। उसका असली नाम धनपतिया था। गूँगेपन के कारण लोग गुँगिया पुकारते थे। शादी के समय गुँगेपन को छिपाने के कारण उसके पति ने उसकी उपेक्षा की। बाद में उसकी बहिन से उसके पति की शादी करवा देती है। लेकिन एक पुत्र को गुँगिया के हाथों मे सौंपकर वह चल बसी। पिता भी पुत्र को छोड़कर शादी करके अलग बसा।

उस नन्हें बच्चे की वह गूँगी माँ बनती है। आँख के पुतले के समान वह उसकी देखभाल करती है। लेकिन उस लड़का कभी भी उसका प्यार न पहचाना। अपने पिता की खोज में जाने पर उसको निराश ही लौटना पड़ा।वह चुपचाप कहीं चल जाता है और गुँगिया उसकी खोज में घूमती फिरती है। गूँगिया के चरित्र द्वारा लेखिका ने नारी का उस वात्सल्यमयी एवं करूणापूर्व चरित्र को पाठकों के सामने उभारा है जो गूँगी होते हुए, पुत्र को अपनी कोख से न जन्म देते हुए भी मातृत्व का महत्वपूर्ण भाव को अपनाया है।

महोदवी ने अपने रेखाचित्रों में नारी का चरित्र को ही महत्वपूर्ण रूप से चित्रित किया है। इन सब में नारी चरित्र के अच्छे व बुरे दोनों पक्ष का उद्‌घाटन किया है। नारी चरित्र का कालिमा युक्त पक्ष विमाता और सपत्नी के रूप में उजागर हुआ। उसकी अपेक्षा, अच्छाइयाँ युक्त पक्ष बहुमुखी है। इन सब रचनाओं की नायिकाओं में सब नारी पात्र विमाता का दुर्वव्यवहार, परित्यक्ता, पराधीन व आर्थिक वैषम्य की मार झेल रहे पात्र हैं।

भारतीय समाज विशेषतः हिन्दू समाज में नारी जीवन अभिशप्त रहा है। इस अभिशप्त की चरम सीमा है बाल विधवाएँ व मातृ–पितृ स्नेह से वंचिताएँ। महोदवी ने नारी के ऐसे अभिशप्त जीवन ढोती नारियों का चित्रण बहुत मार्मिक ढंग से किया है। "चिन्दा" मातृ पितृहीन, सौतेली माँ के दुर्व्यवहार से ग्रस्त बालिकाओं का प्रतिनिधि पात्र है जिसे बार–बार "उठती हूँ या आऊँ", "मोहन का दूध कब गरम होगा" जैसी गर्जनाएँ सुनने को विवश होना पड़ता है। "सबिया" का दुराचारी पति उसे प्रसवकाल में ही छोड़ अपने नातिन की औरत को लेकर भाग जाता है। महादेवी ने सबिया के माध्यम से पारिवारिक उत्तरदायित्व से पलायन करनेवाले उच्छृंखल पुरूष वर्ग के प्रति तीखा व्यंग किया है। महोदवी ने ये सारे नारी पात्र जीवन में संतप्त होने के बावजूद इन्सानियत को नहीं छोड़ते। बदलू और "रधिया" परिश्रमी, कुम्हार दम्पति हैं जो निर्धनता से त्रस्त है। लेखिका ने इनके जीवन का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में निरूपण किया ही है साथ ही उनके अन्तर्मन तक पहुँचने में भी सफल रही हैं।

भारतीय नारी सदैव सहनशील रही है। यह सहनशीलता "लछमा" के चरित्र में तो सीमातीत हो उठी है। "लछमा में मैंने अविचलित रहने की शक्ति भी देखी और बड़े–बड़े अकार को क्षमा कर देने की उदारता भी।" *(अतीत के चलचित्र, पृ. 114)*

सबिया का चित्र प्रस्तुत करते समय महादेवी स्त्री में मर्यादा की सीमा की ओर संकेत करती हैं परंतु समाज की दृष्टि से घिरी नारी का सतीत्व कभी कायम नहीं रह सकता। इसी झुँझलाहट से वे एक अमीर महिला से उलझ पड़ती है– "यदि दूसरों के धन को किसी न किसी प्रकार अपना बना लेने का नाम चोरी है तो मैं मानना चाहती हूँ कि हम में से कौन संपन्न महिला चोर पत्नी नहीं कही जा सकती।" *(अतीत के चलचित्र, पृ. 48)*

रजक वधू "बिबिया" में सहज करूणा की जो चरम स्थिति है, वह भी दर्शनीय है। "इस प्रकार की साँकेतिक भाषा में छिपे व्यंग्य

सुनते–सुनते एक दिन बिबिया गायब हो गई।"*(स्मृति की रेखाएँ, पृ. 116)* सबको उसके दुश्चरित्र पर संदेह होना स्वाभाविक था, परंतु इसके बारे में लेखिका का निष्कर्ष सचमुच सत्य ही है। पुरूष द्वारा बार–बार तिरस्कृत तथा समाज द्वारा प्रताड़ित नारी के पास शेष रहा ही क्यों? केवल एक उपाय–आत्मघात। यही तो नारी की पराजित दशा है।

स्त्री की इच्छा का हमारे समाज में कोई मूल्य नहीं था पुरूष कभी बाप बनकर, कभी पति बनकर, कभी भाई, कभी बेटा बनकर उसे लताड़ता आया है। अपनी मर्जी के अनुसार उस पर अधिकार जमाते आया है। तत्कालीन समाज में हो रहे बालविवाह, अनमेल विवाह एवं अनिच्छा से हो रहे विवाहों का दुष्परिणाम का चित्रण महादेवी ने अपने रेखाचित्रों द्वारा व्यक्त किया है।

पाँच वर्ष में ब्याही गयी "भक्तिन" तीन लड़कियों की माँ बनती है और उनतीसवें वर्ष में ही विधवा बन जाती है। उसकी लड़की किशोरी से युवती होते ही विधवा बन जाती है। "ठकुरी बाबा" अपनी छह–सात वर्ष की पुत्री की सगाई कर निश्चित हो जाते हैं। श्वसुर एवं ननद के कष्ट सहते–सहते मारवाड़ी विधवा भाभी का दम घुटंने लगता है जिस घर मे वह रहती थी उसमें न झरोखा न रोशनदार न कोई नौकर न अतिथि न पशुपक्षी। उस बाल विधवा की स्थिति के बारे में महादेवी जी लिखती है–

"समाधि जैसे घर में लोहे के प्राचीर से घिरे फल के समान वह किशोरी बालिका बिना किसी प्रकार के आमोद प्रमोद के मानो निरंतर वृद्धा होने की साधना में लीन थी।"*(अतीत के चलचित्र, पृ. 29)*

विधवा होने के कारण वह दो समय खाना भी नहीं खा सकती थी। रंगीन वस्त्र भी उनके लिए वर्जित थी। 18वें वर्ष में भी विधवा बनी बालिका माँ समाज क्रूर व्यंग्य से बचने के लिए घोरतम नरक में अज्ञातवास में यंत्रणा से छटपटाती हुई बालिका को जन्म देती है सवाल यह उठता है कि वह अपना आगे का जीवन कैसे बिताये?

36

इस प्रकार महादेवी ने अपने रेखाचित्रों के चरित्रों द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों के, विभिन्न प्रकार के नारियों की चेतना पर प्रकाश डाला है। इन नारियों में कई बालविधवायें है समाज के श्रमजीवी है, दरिद्र हैं, अशिक्षित हैं। इनके जीवन की असंगतियों एवं विसंगतियों में घुटते हुए मानवीय चरित्रों की दुख गाथा भारतीय जीवन की दयनीय परिस्थितियों की बड़ी कारूणिक एवं हृदयस्पर्शी झाँकी प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

१. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
२. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, राधाकृष्ण प्रंकाशन, दिल्ली 2002
३. हिन्दी साहित्य में 'नारी' –सरलादेवी, केरल हिन्दी साहित्य मंडल, कोच्चिन,1971
४. महादेवी वर्मा संचयिता, निर्मला जैन, वाणी प्रंकाशन नई दिल्ली, 2014
५. महादेवी, डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रंकाशन, इलाहाबाद, 2008
६. महादेवी चितन व कला, इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रंकाशन, दिल्ली 1962
७. महीयसी महादेवी, गंगा प्रसाद पाण्डेय, लोकभारती प्रंकाशन, इलाहाबाद, 1969